बी० ए० पार्ट–2 हिन्दी साहित्य (प्रतिष्ठा)

डॉ० आशा कुमारी

अंशकालीन व्याख्याता

हिन्दी विभाग

मगध महिला कॉलेज, पटना

मोबाइल नम्बर–9304098602,7004661162

Email _ ashakumari2500@Gmail.com.

'भाई–बहन' शीर्षक कविता की विशेषताएँ

'भाई–बहन' शीर्षक कविता नेपाली की अत्यन्त प्रसिद्ध कविता है। इसकी रचना सन्1935 ई० में हुई। यह नेपाली की तीसरी कृति 'रागिनी' में संकलित है। अंग्रेजों के विरूद्ध सम्पूर्ण भारतवासी एक जुट होकर आजादी की लड़ाई लड़ रहे थे। ऐसी परिस्थिति में नेपाली की यह कविता नयी परिकल्पना के साथ राष्ट्रीय आंदोलन के महत्वपूर्ण जागरण गीत के रूप में स्वीकृत की गई थी। यह गीत उस समय के युवा वर्ग को उद्वेलित करने में अद्भूत रूप से कारगर हुआ।

नेपाली ने अपने गीतों में प्रकृति, प्रेम, सौन्दर्य एवं राष्टभक्ति को नए दृष्टिकोण से उपस्थित किया है। ''पराधीन सपनेहुँ सुब नहि'' के मूल संकल्पना से भरपूर कवि की लेखनी राष्ट्रमुक्ति हेतु स्त्री–पुरूष दोनों का आहान करती है। इसके लिए कवि ने एक नई शैली 'मैं' और 'तू' अर्थात् बहन के रूप में देश के समग्र नर–नारी को राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने की आतुर पुकार कविता में द्रष्टव्य है। कवि नये रूप में वासंती चोला पहनकर विकराल रूप कल्पना का पूँज बने, तो बहन उसकी चिंगारी बनकर शत्रुओं को जला डाले। कवि कामना करता है कि भाई झेलम नदी का आक्रोशित उफान बने और बहन पवित्र गंगा की निर्वाध धारा वन शत्रुओं को बहा ले जाए। कवि राधा–कृष्ण के प्रेम को भुला देने की बात कहता है और बहन को आँगन–की ज्योति, ममता की गोद, प्रसन्नता एवं मंगलमयी मूर्ति से अभिहित करता है तथा भाई को उसका रखवाला प्रेम–प्रतिमा, खेल–कौतुक करनेवाला इत्यादि से संबोधित किया है। भाई यदि चलने का नाम है तो बहन उसकी बुद्धि है।

कवि भाई और बहन दोनों से यह आहान करता है कि भारत माँ की जंजीर बज रही है अर्थात् दोनों को मिलकर गुलामी की जंजीरों से मुक्ति के लिए प्रयास करनी चाहिए। कवि कहता है कि आओ हम क्रांति से मनोरंजन करें। बहन यदि नदी की बेगवती धारा–सी है, जिसका दोनों किनारा डूबा हुआ है, तो भाई उसकी लहर बन शत्रुओं को

डूबोने के लिए तैयार है। फिर वह भाई को राष्ट्रप्रेम के उन्माद में डूबा हुआ कहता है और बहन उस स्थिति में उसका एकमात्र सहारा और ध्रुवतारा है। राष्ट्रप्रेम में आकंठ डूबे हुए भाई को बहन ही सहारा और उसके लक्ष्य को दिशा दे सकती है। क्रांतिकारी उन्माद की ऐसी घड़ी में भाई–बहन दोंनों का मिलकर आजादी का गीत गाना है, संकटों का सामना करते हुए स्वयं को देश की बलिवेदी पर न्यौछावर करके उन पत्थर–हृदयी अंग्रेजों को समझाना है।

भाई–बहन शीर्षक कविता उस समय लिखी गयी थी, जब राष्ट्रीय आंदोलन चरम पर था। आंदोलन की सफलता के लिए आवश्यक था कि भारत के नर– नारी एक जुट होकर उसमें शरीक होते। आंदोलन के दरम्यान कई ऐसी घटनाएँ सामने आ चुकी थी, जिसमें परिवार और स्त्री–मोह के कारण पुरूषों का संगठन टूट गया था। अथवा कमजोर होकर अंग्रेजों का निवाला बन गया था। परिवार और देश के बीच खींचातानी क्रांतिकारियों के लिए कमजोर कर देनेवाली स्थिति उत्पन्न करती थी। अंग्रेज इस बात का लाभ उठाकर क्रांतिकारियों को अपनी ओर मोड़ लिया करते थे। ऐसे में क्षेत्रीय स्तर के आंदोलन विफल हो गए। कवि इस बात को गहराई से समझता है, इसलिए राष्ट्रहित में नेपाली का यह आहान अत्यंत व्यावहारिक है। जब देश के नर–नारी मिलकर आंदोलन में भाग लेंगे तो वह आन्दोलन भीतरी शक्ति से ओतप्रोत सफलता की ओर गमन करेगा। क्योंकि वहाँ सम्पूर्ण देश ही एक परिवार होगा, जहाँ श्रृंगारिकता का कोई स्थान नहीं।

अतः संघर्ष की ऊर्जा बनी रहेगी। नेपाली की यह कविता इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। कवि ने अनेक उपमाओं से भाई–बहन की एकता की शक्ति को रूपायित करने का प्रयास किया है। उपमाओं के चयन में कवि का सांस्कृतिक ज्ञान हावी है। कविता में आद्यंत तुक का निर्वाह हुआ है नेपाली जी विशेषता है कि वे तद्भव शब्दों का अधिक प्रयोग करते है, लेकिन इस कविता में उन्होंने तत्सम शब्दों का अधिक चुनाव किया है। संभव है यह छायावादी प्रभावहो । तत्सम् शब्दों के प्रयोग से कवि को ओज गुण में निर्वहन करने में सर्वाधिक सफलता मिली है।